

बैंगन के प्रमुख रोग एवं कीट प्रबन्धन



फौमाप्सिश अंगमाशी तथा फल विगलन

- इसके लक्षण तीन रूपों में दिखायी पड़ते हैं (1) पौधशाला में आर्द्रपतन के रूप में (2) पौध लगाने के बाद खेत में अंगमारी (झुलसा) के रूप में तथा (3) फल लगने के बाद फल सड़न के रूप में।
- आर्द्रपतन / आर्द्रगलन रोग पौधशाला का प्रमुख फुफुदं जनित रोग है इसका प्रकोप दो अवस्थाओं में देखा गया है। प्रथम अवस्था में, पौधे जमीन की सतह से बाहर निकलने के पहले ही मर जाते हैं एवं **द्वितीय** अवस्था में, अंकुरण के बाद पौधे जमीन की सतह के पास गल कर मर जाए हैं।
- फ़ोमोब्सिस झुलसा रोग बैंगन का फफूंद उत्पन्न होने वाला बीजजनित रोग है | रोग की प्रारम्भिक अवस्था में पौधशाला में पट्टियों पर मरे - काले धब्बे दिखाई देने लगते हैं तथा बाद में पत्तियाँ पीली होकर गिर जाती है |
- रोग ग्रस्त फलों में गोल धब्बे बनते हैं जो सड़न पैदा करते हैं | बैंगन की फसल के लिए यह घातक बीमारी है | पौधा से पौधा तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी कम होने की स्थिति में इस बीमारी का प्रकोप ज्यादा होता है |

प्रबंधन

- आर्द्रपतन/आर्द्रगलन रोग के रोकथाम के लिए बाविस्टिन (2 ग्रा./कि.ग्रा. बीज) नामक फफुन्दनाशी दवा से बीजों का उपचार करें साथ ही अंकुरण के बाद ब्लूकॉपर-50 (3 ग्रा./ली.) से क्यारी की मिट्टी को भिगो दें।
- फ़ोमोब्सिस झुलसा रोग के रोकथाम के लिए बाविस्टीन 50 डब्लू पी. (2-2.5 ग्राम / लीटर) पानी के घोल में नर्सरी से निकाली गई पौध की जड़ों को रोपाई से पहले 20 मिनट तक डुबोयें | रोपाई के 3 सप्ताह बाद आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।